संधि की परिभाषा

संधि के प्रकार

संधि के नियम

संधि के उदाहरण

संधि किसे कहते है संधि के भेद संधि के उदहारण

संधि-संधि शब्द का अर्थ है मेल। दो निकटवर्ती वर्णों या ध्वनियों के परस्पर मेल से होने वाले परिवर्तन को संधि कहते है। विद्या+आलय= विद्यालय, नर+इंद्र= नरेंद्र, गण+ईश= गणेश

संधि के प्रकार

संधि के 3 प्रकार है –

1. स्वर संधि
2. व्यंजन संधि
3. विसर्ग संधि

1. स्वर संधि किसे कहते है

स्वर का स्वर के साथ मिलान होने से जो विकार (परिवर्तन) बनता है, उसे स्वर संधि कहते है जैसे –

हिम+आलय = हिमालय

महा+आत्मा = महात्मा

प्रति+आशा = प्रत्याशा

सु+उक्ति = सूक्ति

स्वर-संधि पाँच प्रकार की होती हैं-

(I) दीर्घ संधि
(Ii) गुण संधि
(Iii) वृद्धि संधि
(Iv) यण संधि
(V) अयादि संधि

(I) दीर्घ संधि – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ वर्णों के होने वाली संधि को दीर्घ संधि कहते है

इसके तीन नियम है :-

(क) अ और आ की संधि –

अ+अ = आ- वेद+अन्त = वेदान्त, मुख्य+अध्यापक = मुख्याध्यापक

अ+आ= आ- नव+आगत =नवागत, सत्य+आग्रह = सत्याग्रह

आ+अ = आ- विद्या+अर्थी = विद्यार्थी, तथा+अपि = तथापि

आ+आ = आ- दया+आनन्द = दयानन्द, रचना+आत्मक = रचनात्मक

(ख) इ और ई की संधि-

इ+इ = ई- कवि+इंद्र = कवींद्र, मही+इंद्र = महिंद्र।

इ+ई = ई- कपि+ईश = कपीश, मुनि+ईश = मुनीश।

ई+इ = ई- मही+इंद्र = महींद्र, नारी+इंदु = नारींदु

ई+ई = ई- नदी+ईश = नदीश, मही+ईश = महीश

(ग) उ और ऊ की संधि-

उ+उ = ऊ- सु+उक्ति = सूक्ति = भानूदय, कटु+उक्ति = विधूदय
उ+ऊ = ऊ- लघु+ऊर्मि = लघूर्मि, धातु+ऊष्मा = धातूष्मा
ऊ+उ = ऊ- वधू+उत्सव = वधूत्सव, साधू+उत्सव = साधूत्सव
ऊ+ऊ = ऊ- भू+ऊर्जा = भूर्जा, वधू+ऊर्मि = वधूर्मि

जब व्यंजन में से स्वर को अलग किया जाता है तो व्यंजन के नीचे हल चिह्न लगया जाता है या वह आधा लिखा जाता है और जब व्यंजन में स्वर मिलाया जाता है तो पूरा लिखा जाता है

(Ii) गुण संधि – इसमें अ, आ के आगे इ, ई हो तो ए, उ, ऊ हो तो ओ, तथा ऋ हो तो अर् बनता है। इसे गुण-संधि कहते हैं|

क)-अ+इ = ए- नर+इंद्र = नरेंद्र ,सुर+इन्द्र = सुरेन्द्र
अ+ई = ए- सुर+ईश = सुरेश, राज+ईश = राजेश
आ+इ = ए- महा+इंद्र = महेंद्र ,रमा+इन्द्र = रमेन्द्र
आ+ई = ए महा+ईश = महेश , उमा+ईश = उमेश
(ख)-अ+उ = ओ- रोग+उपचार = रोगोपचार , चन्द्र+उक्ति = चन्द्रोदय
आ+उ = ओ- महा+उदय = महोदय, महा+उपकार = महोपकार
अ+ऊ = ओ- सागर+ऊर्मि = सागरोर्मि ,नव+ऊढा = नवोढ़ा
आ+ऊ = ओ- गंगा+ऊर्मि = गंगोर्मि,महा+ऊष्मा = महोष्मा
(ग)- अ+ऋ = अर्- देव+ऋषि = देवर्षि, राज+ऋषि = राजर्षि
(घ)- आ+ऋ = अर्- राजा+ऋषि = राजर्षि, वर्षा+ऋषि = वर्षर्तु

नोट :- जिस र में स्वर नहीं होता वो ऊपर लिखा जाता है

(Iii) वृद्धि संधि – अ आ का ए ऐ से मेल होने पर ऐ अ आ का ओ, औ से मेल होने पर औ बनता है। इसे वृद्धि संधि कहते हैं। जैसे-

(क)- अ+ए = ऐ- एक+एक = एकैक ,पुत्र+एषणा = पुत्रैषणा
अ+ऐ = ऐ- मत+ऐक्य = मतैक्य, देव+ऐश्वर्य = देवैश्वर्य
आ+ए = ऐ- सदा+एव = सदैव , तथा+एव = तथैव
आ+ऐ = ऐ- महा+ऐश्वर्य = महैश्वर्य, गंगा+ऐश्वर्य = गंगेश्वर्य

विसर्ग संधि किसे कहते है

विसर्ग का स्वर या व्यंजन से पहले से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है ,उसे विसर्ग संधि कहते है |जैसे-

यश:+दा = यशोदा

मन:+योग = मनोयोग

1. नियम :- अगर विसर्ग के पहले अ स्वर और आगे अ अथवा कोई सघोष व्यंजन (किसी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण) अथवा य, र, ल, व, ह में से कोई वर्ण हो तो अ और विसर्ग(:) के बदले ओ हो जाता है ।

मनः +बल = मनोबल , यश:+गान = यशोगान

मनः:+अनुकूल= मनोनुकूल , पय:+धि = पयोधि

अध:+गति= अधोगति, तप:+भूमि = तपोभूमि

2. नियम :- विसर्ग से पहले इ या उ स्वर हो और विसर्ग के बाद किसी भी 3,4 वर्ण हो य,र,ल,व ,ह हो या अत: और पुनः शब्द हो तो विसर्ग का र् बन जाता है |जैसे –

दु:+उपयोग = दुरुपयोग , अत:+आत्मा = अंतरात्मा

नि:+आहार = निराहार , दु:+गति = दुर्गति

नि:+आशा = निराशा , पुन:+उक्ति = पुनरुक्ति

नि:+धन = निर्धन , धनु:+ज्ञान = धनुर्ज्ञान

दिक् + अंबर = दिगंबर
वाक् + ईश = वागीश
षट् + आनन = षडानन
जगत् + अंबा = जगदंबा
वाक् + जाल = वाग्जाल
दिग् + दर्शन = दिग्दर्शन
तत् + रूप = तद्रूप
तत् + आकार = तदाकार
उत् + घाटन = उद्घाटन
सत् + उपयोग = सदुपयोग
सम् + भावना = संभावना
सम् + ध्या = संध्या
सम् + सार = संसार

उदाहरण

(a)

अ+अ = आ	सूर्य + अस्त = सूर्यास्त	वेद + अंत = वेदांत
	मत + अनुसार = मतानुसार	पीत + अंबर = पीतांबर
अ + आ = आ	शिव + आलय = शिवालय	मेघ + आलय = मेघालय
	हिम + आलय = हिमालय	दश + आनन = दशानन
आ + अ = आ	विद्या + अर्थी = विद्यार्थी	सीमा + अंत = सीमांत
	रेखा + अंकित = रेखांकित	सेवा + अर्थ = सेवार्थ
आ + आ = आ	विद्या + आलय = विद्यालय	महा + आत्मा = महात्मा
	महा + आनंद = महानंद	विद्या + आनंद = विद्यानंद

(b)

इ + इ=ई	कपि + इंद्र = कपींद्र	रवि + इंद्र = रवींद्र
इ + ई=ई	कपि + ईश = कपीश	गिरि + ईश = गिरीश
ई + इ=ई	शची + इंद्र = शचींद्र	नारी + इंदु = नारींदु
ई + ई=ई	रजनी + ईश = रजनीश	जानकी + ईश = जानकीश

(c)

उ + उ=ऊ	भानु + उदय = भानूदय	सु + उक्ति = सूक्ति
उ + ऊ=ऊ	अंबु + ऊर्मि = अंबूर्मि	सिंधु + ऊर्मि = सिंधूर्मि
ऊ + उ=ऊ	वधू + उत्सव = वधूत्सव	भू + उत्सव = भूत्सव
ऊ + ऊ=ऊ	भू + ऊर्जा = भूर्जा	वधू + ऊर्मि = वधूर्मि

(a)

अ + इ + = ए	सुर + इंद्र = सुरेंद्र	देव + इंद्र = देवेंद्र
आ + इ = ए	यथा + इष्ट = यथेष्ट	राजा + इंद्र = राजेंद्र
आ + ई = ए	लंका + ईश = लंकेश	रमा + ईश = रमेश
अ + ई = ए	कमल + ईश = कमलेश	वीर + ईश = वीरेश

(b)

अ + उ = ओ	नर + उत्तम = नरोत्तम	भाग्य + उदय = भाग्योदय
अ + ऊ = ओ	समुद्र + ऊर्मि = समुद्रोर्मि	जल + उर्मि = जलोर्मि
आ + उ = ओ	महा + उत्सव = महोत्सव	महा + उदय = महोदय
आ + ऊ = ओ	गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि	महा + ऊष्मा = महोष्मा

(c)

अ + ऋ = अर्	राज + ऋषि = राजर्षि	ब्रह्म + ऋषि = ब्रह्मर्षि
आ + ऋ = अर	महा + ऋषि = महर्षि	राजा + ऋर्षि = राजर्षि

अधः + मुखी = अधोमुखी
अधः + गति = अधोगति
मनः + रथ = मनोरथ
मनः + हर = मनोहर
दुः + बल = दुर्बल
निः + उत्साह = निरुत्साह
दुः + कर = दुष्कर

परिः + छेद = परिच्छेद
हरिः + चंद्र = हरिश्चंद्र
निः + पक्ष = निष्पक्ष
नमः + ते = नमस्ते
निः + तेज = निष्तेज
निः + रव = नीरव

(ख)-अ+ओ = औ- जल+ओघ = जलौघ ,
परम+ओजस्वी = परमौजस्वी
आ+ओ = औ- महा+औषध = महौषधि , महा+ओजस्वी
= महौजस्वी
अ+औ = औ- परम+औषध = परमौषध ,जल+औषधि =
जलौषधि
आ+औ = औ- महा+औषध = महौषध , महा+औदार्य =
महौदार्य

(Iv) यण संधि – जब इ, ई के बाद कोई भिन्न स्वर हो तो 'य' उ,ऊ के बाद कोई भिन्न स्वर हो तो 'व्' ,ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर हो तो 'र' में बदल जाता है उसे यण संधि किसे कहते हैं।

इ+अ = य – अति+अधिक = अत्यधिक ,प्रति+अक्ष = प्रत्यक्ष

इ+आ = या- इति+आदि = इत्यादि , प्रति+आशा = प्रत्याशा

ई+अ=य्+अ नदी+अर्पण = नद्यर्पण

ई+आ=य्+आ- देवी+आगमन = देव्यागमन, देवी+उदय = देव्युदय

उ+अ=व्+अ अनु+अय = अन्वय,

उ+आ=व्+आ सु+आगत = स्वागत

उ+ए=व्+ए अनु+एषण = अन्वेषण

ऋ+अ=र्+आ पितृ+आज्ञा = पित्राज्ञा, पितृ+अनुमति = पित्रनुमती

(V) अयादि संधि- ए,के बाद कोई भिन्न स्वर हो तो 'अय्' ऐ के बाद कोई भिन्न स्वर हो तो 'आय्' और ओ के बाद कोई भिन्न स्वर हो तो 'अव्' और औ के बाद कोई भिन्न स्वर हो तो 'आव्' के साथ भिन्न स्वर का समावेश हो जाता है ,उसे अयादि संधि कहते हैं।जैसे –

(क) ए+अ=अ य्+अ -ने+अन+नयन , शे+अन = शयन

(ख) ऐ+अ=आय्+अ -गै+अक = गायक, नै+अक = नायक

(ग) ओ+अ=अव्+अ -पो+अन = पवन , भो+अन = भवन

(घ) औ+अ=आव्+अ- पौ+अक = पावक , धौ+अक = धावक

औ+इ=आव्+इ- नौ+इक = नाविक, धौ+इका = धाविका

2. व्यंजन संधि किसे कहते है

व्यंजन का स्वर या व्यंजन के साथ मेल होने पर जो परिवर्तन होता है , उसे व्यंजन संधि कहते है |जैसे-

उत+उल्लास = उल्लास

अप+ज = अब्ज

1. नियम :- अगर क्, च्, ट्, त्, प् के बाद किसी वर्ग का तीसरा या चौथा वर्ण या य्, र्, ल्, व् हो या कोई स्वर हो तो उसी वर्ग का तीसरा वर्ण बन जाता है अर्थात क् के स्थान पर ग्, च् के स्थान पर ज्, ट् के स्थान पर ड्, त् के स्थान पर द् और प् के स्थान पर ब् बन जाता है ।जैसे-

दिक्+गज = दिग्गज

वाक्+ईश = वागीश

2. नियम :- यदि किसी वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) का मेल न् या म् वर्ण से हो तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाता है|जैसे –

वाक्+मय = वाङ्मय

अच्+नाश = अञ्नाश

षट्+मास = षण्मास

उत्+नायक = नायक

अप्+मय = अम्मय

षट्+मुख = षण्मुख